International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(6): 229-232

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(6): 229-232
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-09-2021
Accepted: 23-10-2021

दीपशिखा
शोध-छात्रा संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
दीपशिखा
शोध-छात्रा संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली, भारत

रामायण के सुन्दरकाण्ड में प्रयुक्त उपसर्ग, निपात एवं क्रियापदों का दिग्दर्शन

दीपशिखा

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य की अविच्छिन्न परम्परा शताब्दियों से परिवर्धित व परिमार्जित होती हुई वर्तमान स्वरूप में सुशोभित है। दैवीवाक् संस्कृत में जो रचनाएं वैदिककाल में आरम्भ हुई वे आज भी अनवरत रूप से प्रचलित हैं। सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य को सामान्यतया दो भागों में विभक्त किया गया है-

वैदिक साहित्य
लौकिक साहित्य

वैदिक साहित्य कि परम्परा का मूल स्रोत विश्वसाहित्य का प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद है जबकि लौकिक साहित्य का प्रारंभ आदि कवि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण से माना जाता है। जिस काव्यतरु पर आरूढ़ होकर प्राचेतस् आदिकवि वाल्मीकि रूप कोकिल ने राम राम इण मधुराक्षरों के रटन से साहित्य जगत् को अनुगुञ्जित किया, वह रामायण भारतीय साहित्य की अभ्रंलिह अट्टालिका है। वाल्मीकि भारतीय साहित्य के एकमात्र ऐसे कवि हैं जिनका प्रभाव भारतीय संस्कृति व साहित्य दोनों पर दृष्टिगोचर होता है।

ऐसी श्रुति है कि इन्हें धार्मिक जीवन की दीक्षा सप्तर्षियों ने दी थी,जिसके उपरान्त इन्होंने इतने लंबे समय तक समाधि लगाई कि इनके चारों ओर दीमक ने वल्मीक निर्मित कर ली तभी से ये वाल्मीकि कहलाये। नारद मुनि से राम विषयक वार्तालाप के बाद इनकी रुचि राम जीवन की ओर हो गई। एक बार वाल्मीकि समीपवर्ती तमसा नदी पर गए। मार्ग में क्रौञ्चयुगल में से एक के निर्मम वध को देखकर वाल्मीकि शोकसंविग्न हो गए तब व्याध को चीर काल तक दुखी रहने का शाप दे दिया। यही श्राप पद्य रूप में मुखरित हुआ –

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।

यहीं सर्वप्रथम लौकिक तथा पौरुषेय छन्द का अवतरण हुआ।[1] इसी हेतु से कालिदास, भवभूति तथा अन्य अनेक महकवियों ने अपनी अपनी रचनाओं में वाल्मीकि को स्मरण किया है –

[1] आम्नायादन्यत्र नूतनश्छन्दसामवतारः। उत्तर राम चरितम्- २

तामभ्यगच्छद्रुदितानुसारी कविः कुशेध्माहरणाय यातः।
निषादविद्धाण्डजदर्शनोत्थः श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः।।[2]
आद्यः कविरसि।[3]
क्रौञ्चद्वन्द्वियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः।[4]
सदूषणाऽपि निर्दोषा सखराऽपि सुकोमला।
नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा।। [5]
स वः पुनातु वाल्मीकेः सूक्तामृतमहोदधिः।
ओङ्कार इव वर्णानां कवीनां प्रथमो मुनिः।।[6]

कविराज भोज ने भी वाल्मीकि को मधुरतम उक्तियों का मार्गदर्शी बताया है-
मधुमयभणितीनां मार्गदर्शी महर्षिः।।[7]
विण्टरनिट्ज ने भी वाल्मीकि के कवित्व की प्रशंसा में लिखा है-
It was he who discovered the great truth that true poetry is spontaneous of the poet's heart in response to the pain and anguished cry of the universe.[8]

रामायण: एक परिचय

किसी युग का साहित्य तत्कालीन समाज का दर्पण होता है । उससे समाज की आशाओं व आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति होती है। प्रत्येक कवि जन जीवन को अपने दृष्टिकोण से देखता है और विशिष्ट प्रणाली से उन अनुभूतियों को व्यक्त करता है। अतः ये भाव परम्परागत होते हुए भी नवीनता लिए हुए होते हैं।
प्राचीन समाज के साहसिक व गौरवशाली जीवन को एक अनूठी संगीतमय, छन्दोबद्ध व संगीतमय शैली में चित्रित कर वाल्मीकि ने साहित्य को कला का भव्य रूप प्रदान किया है। रामायण को यदि भारतीयों की अक्षय निधि कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी-
It has become the property of the whole Indian people and scarely any other poem in the entire literature of the world, has influenced the thougth and poetry of the nation for centuries. – Winternitz [9]
रामायण महाकाव्य चौबीस हजार श्लोकों से समृद्ध है, जिसे सात काण्डों में विभक्त किया गया है –

1. बालकाण्ड
2. अयोध्याकाण्ड
3. अरण्यकाण्ड
4. किष्किन्धाकाण्ड
5. सुन्दरकाण्ड
6. युद्धकाण्ड
7. उत्तरकाण्ड

उपर्युक्त सात काण्ड लगभग पाँच सौ सर्गों में विभक्त हैं। यद्यपि श्लोकों कि संख्या में विद्वद्समूह में मतभेद है । कुछ विद्वान सर्गों कि संख्या ५३७ मानते हैं जबकि दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार सर्गों की संख्या ६४८ है । तथापि स्वयं रामायण में वर्णित है –

चतुर्विंशसहस्राणि श्लोकनामुक्तवानृषिः ।
तथा सर्गशतान् पञ्च षट्काण्डानि तथोत्तरम् ।।
आदिकाव्य रामायण पर अनेक टीकाएँ भी प्राप्त होती हैं । यथा –

महेश्वरतीर्थप्रणीत रामायणतत्त्वदीपिका
श्रीरामकृत अमृतकटक
गोविन्दराजप्रणीत रामायणभूषण
अहोबलकृत वाल्मीकिहृदय
रामकृत रामायणतिलक
शिवसहायप्रणीत रामायणशिरोमणि

सुन्दरकाण्ड:

रामायण के सात काण्डों में सुन्दरकाण्ड भाषा, काव्य, अलङ्कार सभी दृष्टियों से सर्वोत्कृष्ट है। इसमें आरम्भिक सर्गों में लंका वर्णन से लेकर अन्त में हनुमान को सीता प्राप्ति तक का वर्णन इस काण्ड में प्राप्त होता है। इस काण्ड के नामकरण के विषय विद्वानों द्वारा अनेक तर्क दिए जाते हैं, जो निम्न हैं –

- नष्टद्रव्यस्य लाभो हि सुन्दरः परिकीर्तितः।
  अर्थात् नष्ट वस्तु की प्राप्ति 'सुन्दर' कही जाती है। पञ्चम काण्ड में हनुमान को खोई हुई सीता की पुनः प्राप्ति होती है। अतः इसका नाम 'सुन्दरकाण्ड' उचित है ।
- इस काण्ड में सभी मनोव्यथा को छोड़कर सुखातिशयता को प्राप्त हुए। सीता को रामविषयक सूचना प्राप्त करके हर्ष हुआ व राम को भी सीता-प्राप्ति पर हर्ष हुआ।
- सुन्दर शब्द वानर का भी पर्यायवाची है। इस काण्ड में हनुमान के पराक्रम व सफलता का वर्णन है। अतः 'सुन्दरकाण्ड' यह नाम उचित ही है ।
- प्रस्तुत काण्ड में सर्वत्र सौन्दर्य का वर्णन है। सर्वप्रथम लंका वर्णन की शोभा से लेकर अन्त पर्यन्त कथा में सर्वत्र सौन्दर्य ही दृष्टिगोचर होता है।

  सुन्दरे सुन्दरी लंका सुन्दरे सुन्दरी कथा।
  सुन्दरे सुन्दरी सीता सुन्दरे किं न सुन्दरम्।।
  सुन्दरे सुन्दरीसीतामक्षतां मारुतेर्मखात्।

[2] रघुवंश- १४.७०
[3] उ० रा० च०- २
[4] ध्वन्यालोक- १.१५
[5] नलचम्पू-१.११
[6] क्षेमेन्द्र- रामायणमञ्जरी
[7] चम्पूरामायण-१.८
[8] Some aspects of literary criticism in Sanskrit
[9] History of Indian Literature, vol-1

श्रुत्वा हृष्टस्तथैवास्तु स रामः सततं हृदि।।[10]

रामायण सदा से असंख्य कवियों की प्रेरणा का अनंत स्रोत व चिरंतन आदर्श रही है। यह परवर्ती अनेक कवियों के लिए आदर्श उपजीव्य है। छन्द, अलंकार, भाषा आदि साहित्यिक तत्वों कि दृष्टि से इसका पर्याप्त अनुशीलन हुआ है किन्तु कुछ भावप्रधान व धार्मिक अस्मिता का परिचायक होने के कारण इसका व्याकरणात्मक अनुशीलन स्वल्प ही हुआ है। यहाँ सुन्दर काण्ड के पदजातों के कुछ प्रयोगों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है-

उपसर्ग प्रयोग

निर्-दुर्-प्रति- दुष्करं निष्प्रतिद्वन्द्वं चिकीर्षन्कर्म वानरः ।
सम्- समुदग्रशिरोग्रीवो गवां पतिरिवाबभौ ।। 1.2।।
वि+आङ्,सम्- व्याविद्धहारकेयूरा: समामृदितवर्णकाः ।
सम्+आङ्- समागलितकेशान्ताः सस्वेदवदनास्तथा।।18.16।।
वि- अहमिक्ष्वाकुनाथेन सागरेण विवर्धितः ।
अव- इक्ष्वाकुसचिवश्चायं तन्नार्हत्यवसादितुम् ।।1.87।।
उप,सम्- समीपमुपसंक्रान्तं विज्ञातुमुपचक्रमे ।। 18.25।।
उप- यथा यथा समीपं स हनूमानुपसर्पति ।
परि- तथा तथा रावणं सा तं सीता परिशङ्कते ।।34.8।।

निपात-प्रयोग-

इव- अनुजग्मुः पतिं वीरं घनं विद्युल्लता इव ।।18.15।।
बभूव दुःखोपहतश्चिरस्य प्लवङ्गमो मन्द इवाचिरस्य।।16.27।।
नूनम्- अनेन नूनं प्रति दुष्टकर्मणा हता भवेदार्यपथे परेस्थिता ।।12.3 ।।
वनेचारां सततं नूनं स्पृहयते पुरा ।।14.48।।
एकस्थहृदया नूनं राममेवानुपश्यति ।।16.25।।
हि- एषा हि रहिता तेन शोभनार्हा न शोभते ।।16.26।।
नु- किं नु तत्कारणं येन रामो दृढपराक्रमः ।।

निरुपसर्ग तिङन्त क्रियापद-

प्रीतिं च मम मान्यस्य प्रीतोऽस्मि तव दर्शनात् ।। 1. 122।।
ददर्श स महातेजा न ददर्श च जानकीम्।।11.36।।
अकार्यं ये न जानन्ति नैर्ऋताः पापकारिणः ।।36.31 ।।
अनीशा किं करिष्यामि विनाथा विवशा सती ।

सोपसर्ग तिङन्त क्रियापद-

संतापयसि मां भूयः संतापं तन्न शोभनम् ।।34.1611
यत्र ते नाभिजानीयुर्हरयो नापि राघवः। 137.57।।
प्रजगाम नभश्चन्द्रो हंसो नीलमिवोदकम् ।

सोपसर्ग कृदन्त क्रियापद-

भर्तृजेन तु दुःखेन अभिभूता वनौकसः ।।13.29 ।।
विमानात्तु स संक्रम्य प्राकारं हरियूथपः ।।13.1 ।।
विचेष्टमाना पतिता समुद्रे जनकात्मजा ।।13.10।।
दिवं गते वायुपथे प्रतिष्ठितं व्यराजतादित्यपथस्य लक्ष्म तत् ।।8.2।।
उत्थाप्य सहसा नीतो भवनं स्वं निशाचर: । 158.8011

निरुपसर्ग कृदन्त क्रियापद-

सपुत्रदारा: समात्या भर्तृव्यसनपीडिताः ।।। 3.33 ।।
ततः स तां कपिरभिपत्यपूजितां चरन्पुरीं दशमुखबाहुपालिताम् ।।7.16।।
ततः स कपिशार्दूलस्तेन वाक्येन तोषितः ।। 38.1 ।।
पीड्यमानस्तु बलिना महेन्द्रस्तेन पर्वतः ।। 1.15 ।।

सन्दर्भ

1. वाल्मीकि रामायण- गोविन्द भवन, गीताप्रेस गोरखपुर
2. रामायणम्- तिलक-भूषण-शिरोमणि-टीकात्रयेणोपस्कृतम् परिमल-पब्लिकेशन्स, दिल्ली-2002
3. श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्- पंडित अखिलानन्द- झरिया रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ (सोनीपत) 1999 ई.
4. काशिका-वामन-जयादित्य: विजयपालो विद्यावारिधि:, रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ 1997 ई.
5. उणादिकोष- स्वामी दयानन्द सरस्वती, युधिष्ठिर मीमांसक
रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ (सोनीपत)1974 ई.
6. अष्टाध्यायी- ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ (सोनीपत)2010 ई.
7. निरुक्त- चंद्रमणि विद्यालंकार, आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला, सम्वत् 2033 वि.
8. काव्यप्रकाश- आचार्य मम्मट, आचार्य विश्वेश्वर, संत कबीर मार्ग, वाराणसी-221001
9. लघुसिद्धांतकौमुदी (भैमीव्याख्या)- भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली 2014
10. धातुपाठ:- रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ (सोनीपत) 1982

[10] तिलकटीका

11. पाणिनीयशब्दानुशासनम्- सत्यानंदवेदवागीश:, 2013 ई.
12. अमरकोश: (क्षीरस्वामिकृत-अमरकोषोद्घाटन-व्याख्योपेत)- श्री कृष्ण जी गोविन्द ओक उपासना प्रकाशन 165 डी कमला नगर, दिल्ली-110007, 1981 ई.
13. अमरकोश-रामाश्रमी टीका हरगोविंद शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी, 1982 ई.
14. साहित्यदर्पण- विश्वनाथ, दुर्गाप्रसाद द्विवे दी, स्ट्रीट-1 अंसारी रोड दरियागंज-1982 ई.
15. संस्कृत-हिंदी-कोष-आप्टे वामन शिवराम, मोतीलाल, बनारसीदास, दिल्ली-1973
16. अव्ययार्थ:- पाणिनिमुनि- स्वामी दयानन्द सरस्वती, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
17. संस्कृत साहित्य का इतिहास- बी. वरदाचार्य, एम.ए., रामनारायण लाल, इलाहाबाद
18. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-डॉ० कपिलदेव द्विवेदी